

अशास्त्रता की कगार पर...

भारत में जलवायु परिवर्तन : नुकसान एवं निवारण

संतोष शिंदे

हिन्दी अनुवाद - समृद्धि पटवर्धन

पृथ्वी दिवस आयोजन



अशाश्चर्यता की कगार पर....

भारत में जलवायु परिवर्तन : नुकसान एवं निवारण



संतोष शिन्त्रे

हिन्दी अनुवाद: समृद्धि पटवर्धन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितम्बर, 2021

© संतोष प्रभाकर शिन्त्रे

आवरण-सज्जा : राजू देशपांडे, शेखर गोडबोले

ISBN: 978-81-951158-0-8

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी स्वरूप में या माध्यम के द्वारा या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में पुनः प्रकाशित, संग्रहित अथवा अनुवादित करने के लिए लेखक की पूर्व अनुमति आवश्यक है।

“You will die of old age,
we will die of climate change”

उपभोक्तावादी, जलवायु परिवर्तन को नाकारने वाली,
अपनी पिछली निष्क्रिय पीढ़ी को डंके की चोट पर बेसूद करनेवाले
विश्वभर के युवाओं को अर्पण....

"Put it before them, so they will read it

Clearly, so they will appreciate it

Picturesquely, so they will remember it

And above all, accurately,

So as to be guided by its light."

- Joseph Pulitzer

भूमिका

कभी-कभी ऐसा समय आता है, जब लाभ- नुकसान, सफलता-असफलता, शोहरत-विस्मृति, ये सभी मापदंड बाजू में रखकर स्वयं को महसूस होने वाले तथ्यों का अनुभव, सत्य पाठकों के सामने रखना ही एकमेव उद्देश्य होना चाहिए।

इस पुस्तक का लेखन भी ऐसा ही एक अवसर है।

बहुत ही बड़ा और विश्वव्यापी संकट हम पर मंडरा रहा है और हम उसकी उपेक्षा किए जा रहे हैं। और दुर्भाग्य यह है कि काफी भारतीय लोगों को उसकी व्यापकता, उसके निरंकुश भयानक स्वरूप की प्राथमिक पहचान भी नहीं है। शायद आसान शब्दों में ऐसा करने का प्रयास ही आज तक नहीं हुआ होगा।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए आवश्यक कार्यवाही में शासकीय कारक - स्थानीय सरकारें, राज्य सरकारें और केंद्र सरकार- कई मामलों में कम पड़ रहे हैं; जिस विकासोन्माद के अधीन होकर हम इन कारकों की निष्क्रियता और उससे होनेवाले नुकसान में वृद्धि करते जा रहे हैं, उससे यह तो निश्चित हो रहा है कि उसका पुनर्विचार करने का समय आ गया है। दूसरी ओर, आम नागरिकों द्वारा दैनंदिन कार्यों में जो सर्जनशीलता अपनी जीवनशैली में दिखाई जानी चाहिए, वह तो दूर क्षितिज तक कहीं नज़र नहीं आ रही।

ऐसे में एक पर्यावरण पत्रकार केवल एक ही कार्य कर सकता है -अपनी भाषा में यह पूरा विषय, प्रभावी उपाय, आदि पाठकों के सामने सटीक ब्यौरे सहित प्रस्तुत करना। जहाँ-जहाँ संभव हो, वहाँ जानकारी को अधिक स्पष्ट तरीके से समझाने के लिए इंफोग्राफिक्स, आकृतियों, इन सभी का उपयोग करना। अत्यंत सकारात्मक तरीके से इस संकट के खिलाफ पूरा विश्व कैसे संघर्ष कर रहा है और हम उस में कैसे शामिल हो सकते हैं, इसका सारांश पाठकों के सामने रखना। प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के अनेक स्रोतों से पाठकों को अवगत कराना। ये सभी तय होने पर फिर पुस्तक प्रकाशित करने का निर्णय स्वाभाविक था।

इस पुस्तक के मूर्त अवतार में आने के पीछे अनेक मित्रों, सहकारियों का योगदान है। मराठी समाचारपत्र 'सकाल' के संपादक श्री निरंजन आगाशे और श्री अनिल पवार ने सालभर चलने वाले मेरे इस पाक्षिक स्तंभ को बड़ी ही निष्ठापूर्वक संभाला। अश्विनी मेनन नामक युवा प्रतिभावान कलावती ने मुखपृष्ठ पर छपे अपने व्यंग्य-चित्र के व्यावसायिक उपयोग के लिए अनुमति प्रदान की। माधव गोखले और प्रसाद नामजोशी इन मित्रों का प्रकाशन के विभिन्न चरणों में अमूल्य योगदान है।

राजू देशपांडे और शेखर गोड़बोले, ये दो मित्र तो हमेशा ही मेरे हर पुस्तक के लेखन में दृढ़ता से साथ खड़े रहे हैं। पुस्तक में उल्लिखित वैज्ञानिक विवरण, आकृतियों को बारकाई से देखकर योग्य सुधार सुझानेवाले दो व्यक्ति। पहला - प्रशांत शेवगावकर-

शालेय जीवन से मेरा दोस्त। अपनी सुकन्या प्राची शेवगावकर के साथ-साथ ‘कूल द ग्लोब’ नामक ऐप का सह-निर्माता । निजी उत्सर्जनों को कम करने के लिए समयबद्ध योजना बनाकर देने वाला यह ऐप, मेरे लेखन के हेतु से कितना मिल-जुल रहा है।

और ऐसे ही महत्वपूर्ण संशोधन सुझाने वाली दूसरी व्यक्ति है प्रा.समृद्धि पटवर्धन। भूगोल विषय को लेकर उसकी लगन और निष्ठा अपार है। उसी ने इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद भी किया है, यह मेरे लिए बड़े ही प्रसन्नता की बात है।

आसावरी महाजन ने संगणकीय मुद्रण का काम समय पर बिना किसी शिथिलता के सहज ही कर दिया। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ।

पाठकों की प्रतिक्रिया जानने में मुझे निश्चित ही प्रसन्नता होगी।

संतोष शिन्त्रे

shintresantosh@gmail.com

अनुक्रमणिका

1. जलवायु परिवर्तन और हम सभी	10
2. 'कुंजपुरा पार करना' मतलब क्या?	13
3. ओज़ोन की परत- एक आश्वासक विजय	16
4. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और भारत की बड़ी भूल	22
5. इस 'डेढ़' की आवश्यकता क्यों	25
6. पेरिस समझौता कोई जादू की छड़ी नहीं है!	28
7. सरकारी नीतियाँ और जीवन शैली	38
8. कोरोना और जलवायु परिवर्तन	41
9. जीवनशैली से सरकारी नीति की ओर....	44
10. राज्यों की कार्य योजनाओं पर एक नजर	48
11. जलवायु परिवर्तन के रोकथाम के उपाय, वैभव के वैरी नहीं	51
12. मनन- कथन-नियोजन- प्रवर्तन	54
13. राष्ट्रीय कार्यदलों का कार्य- निष्पादन	57
14. ऊँची दुकान फीका पकवान	60
15. सौर कार्यदल का 'अंधेरखाता'	64
16. शेष कार्यदल: आर्थिक शक्ति और मानवीय श्रम का अभाव	67
17. ऊष्मा के नगरीय द्वीप	70

18. जलस्रोतों पर होने वाला प्रतिकूल परिणाम	79
19. समुद्र और सागरीय तटों का 'तंग' होना	82
20. प्रौद्योगिकी में आवश्यक 'जोड़ प्रत्यारोपण'	85
21. वनों के सामने चुनौतियाँ	88
22. वन और वर्षा की मात्रा	91
23. वन्यजीवन और जलवायु परिवर्तन	94
24. वन्यजीवों को कैसे बचाया जाए?	97
25. बदलती जलवायु में अन्नब्रह्म	100
26. विकसित देशों के ढोल की पोल	103
27. सामाजिक संस्थाएँ, आंदोलन- अवसर और सीमाएँ	106
28. सामाजिक विषमताओं के कारण संकटों में होने वाली वृद्धि	116
29. विभिन्न सामाजिक घटकों से वार्तालाप	120
30. बदलाव हम से हैं	124
शब्दावली	128
संदर्भ	152

जलवायु परिवर्तन और हम सभी

एक घमासान युद्ध चल रहा था और बड़ा ही घबराया हुआ एक सिपाही हड़बड़ाते हुए सेनापति से आकर कहता है, “हमें शत्रु ने सभी ओर से घेर लिया है!” और तब सेनापति बड़े ही उत्साह से कहता है, “वाह! यानी अब हम किसी भी ओर से या फिर सभी ओर से शत्रु पर हमला कर सकते हैं!”

वर्ष 2019 में मैड्रिड में जलवायु संबंधी शिखर सम्मेलन असफल होने के कारण उठी सार्वभौमिक निराशा की पृष्ठभूमि में यह कहानी याद आती है।

आज तक, आम हिन्दी पाठक सामान्यतया “जलवायु परिवर्तन” ये शब्द सुनते ही आगे लिखी हुई विषय सामग्री को नज़र अंदाज कर आगे बढ़ता था या फिर मन ही मन में यह सोचकर कि यह सब तो ‘उधर’ कहीं दूर हो रहा है, लिखे साहित्य पर दौड़ती नज़र डालकर अपनी स्मरणशक्ति के रद्दीवाले कोने में फेंककर मुक्त हो जाता था। संकट के प्रति कोई भी जीव दो तरह की जैविक प्रतिक्रियाएँ देता है - लड़ो (fight) या भागो (flight)। उसी के अनुसार ही ऐसी प्रतिक्रियाएँ रही हैं। और इसके पीछे कुछ प्रमुख कारण भी थे। पाठकों को समझ में आनेवाली सरल, सीधी भाषा में ऐसे संकटों को दरअसल समझाया ही नहीं गया है, यह उनमें से एक प्रमुख कारण है। लेकिन अब यह